"कहानियाँ भी डेटा: "इम्पैक्ट को समझने का मानवीय नज़रिया"

By Preeti Poddar, Program Officer: Learning & Development

विकास और सामाजिक बदलाव के क्षेत्र में जब भी किसी कार्यक्रम (Program) की सफलता को मापा जाता है, तो सबसे पहले जो चीज़ सामने रखी जाती है, वह है - आंकड़े। (Numbers)

How many people were reached?

How many received training?

How many were impacted?

How many beneficiaries?

What percentage of people showed change?

ये सवाल ज़रूरी हैं, लेकिन क्या बदलाव की पूरी तस्वीर सिर्फ इन नंबरों से बनती है?

Protsahan India Foundation के 15 वर्षों से काम करने के अनुभव से हम यह समझ पाए हैं, कि बदलाव वह है जो लोगों के जीवन में, उनकी सोच में और आत्मविश्वास में आता है। यह बदलाव केवल सर्वे के कॉलम में नहीं समाता, बल्कि कहानियों के ज़रिए बोलता है। कहानियाँ जो आँकड़ों से आगे जाकर हमें बदलाव की झलक दिखाती

है कहानियों में, गर्ल चैंपियन की, महिलाओं की, समुदाय के लोगो की, जो शोषण और हिंसा से लड़कर अपनी ज़िंदगी की कहानी खुद लिख रहे हैं।

संख्या बनाम आख्यान (Number V/S Narratives) की अगर हम बात करें तो आज भी अधिकांश डोनर और फंडर कार्यक्रमों (Program) को समझने के लिए केवल 'लॉजिकल फ्रेमवर्क' (Logframe) देखते हैं – इनपुट, आउटपुट, आउटकम और इम्पैक्ट। इसमें यह बताया जाता है कि कितने Adolescent Girl को ट्रेनिंग दी गई, कितने समुदाय तक पहुँचा गया, कितने लोग सेवाओं से लाभान्वित हुए। लेकिन सवाल यह है कि क्या इन नंबरों के पीछे की आवाज़ हम सुन पा रहे हैं?

प्रोत्साहन में हम यह मानते हैं कि बदलाव की सही गहराई समझने के लिए कहानियों की ज़रूरत है। उदाहरण के तौर पर:-

दिल्ली के स्लम की तंग गलियों से निकली रेशमा, (बदला हुआ नाम) प्रोत्साहन गर्ल चैंपियन, ने बचपन में पिता को खोया, मां के साथ, घरेलू सहायिका काम और चप्पल फैक्ट्री में काम किया। मुश्किल हालातों में भी उसके भीतर सीखने की आग जलती रही। प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन के आर्ट बेस्ड थैरेपी में शामिल हुई। थिएटर, कठपुतली और डांस मूवमेंट थेरेपी के ज़रिए उसके अंदर आत्मविश्वास, बेबाकपन, हौंसला आया | प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन के गर्ल चैंपियन फेलोशिप और आर्ट-बेस्ड थैरेपी के द्वारा उसकी ज़िंदगी बदल गयी। आत्मविश्वास, अधिकार और सपनों पर यक़ीन करना सीखा।

आज वही रेशमा Ginger होटल के फ्रंट डेस्क पर आत्मबल और मुस्कान के साथ खड़ी है। रेशमा एक मिसाल है, कि लड़कियाँ दया नहीं, अवसर चाहती हैं | और जब उन्हें दिशा मिलती है, तो वे समाज में बदलाव लाती है | डर से लड़कर आत्मविश्वास की ओर यह रेशमा की यात्रा है। चाहो तो इसे एक डेटा पॉइंट मान लो और ग्राफ में डाल दो, या चाहो तो इससे यह समझ लो की विक्टिम से सर्वाइवर बनने के यात्रा कैसे तेय की जाती है संस्था के प्रोग्राम में।

ऐसी कहानियाँ आँकड़ों के फ्रेम में नहीं समा सकतीं, लेकिन वह यह दिखाती हैं कि हमारा काम वास्तव में किस दिशा में जा रहा है।

प्रोत्साहन में गर्ल चैंपियंस को सिर्फ 'संख्या' नहीं समझते। वे परिवर्तन की वाहक हैं। जब एक गर्ल चैंपियन थिएटर, डांस मूवमेंट थेरैपी, स्टोरीटेलिंग या क्ले पॉटरी जैसी हीलिंग आर्ट्स के ज़रिए अपने दर्द को अभिव्यक्त करती है, तो वह अपने जीवन पर फिर से नियंत्रण पाना शुरू करती है। हम जब गर्ल चैंपियन के अंदर आत्मविश्वास और हौंसला देखते है तो ऐसा लगता है, की नंबर तो सिर्फ़ बोलते हैं, पर कहानियाँ जीवंत महसूस होती हैं |

हमारी गर्ल चैंपियन मीरा (बदला हुआ नाम), जो सुरक्षा, गरिमा और अवसर से वंचित रही थी | वह अब थिएटर के मंच पर खड़ी होकर न केवल कला के माध्यम से समुदाय में बाल विवाह, बाल मज़दूरी जैसे मुद्दों के विरुद्ध थिएटर के द्वारा समुदायों को जागरूक कर रही है, बल्कि हज़ारों अन्य लड़कियों को प्रेरित कर रही है कि वे भी अपने जीवन की मुख्य किरदार बनें | क्या यह ' कम्युनिटी रिज़िलीअन्स' या फिर 'सिस्टम चेंज' नहीं है?

कला के द्वारा आँकड़ों की संवेदनशील व्याख्या

हमारी कार्यप्रणाली (methodology) में 'कला' केवल एक माध्यम नहीं, बल्कि एक पुल है | जो दर्द और हीलिंग के बीच जुड़ाव बनाता है। हमने देखा है कि जब गर्ल चैंपियंस डांस मूवमेंट थेरैपी, क्ले पॉटरी, स्टोरीटेलिंग के ज़रिए अपने अनुभव साझा करती हैं, तो वे सिर्फ अभिव्यक्ति नहीं कर रही होती है, वे अपने जख्मों को भर रही होती हैं। यह भी एक तरह का डेटा है | लेकिन यह डेटा पर्सेंटेज या ग्राफ में नहीं आता। यह उनकी आँखों में दिखता है, उनके आत्मविश्वास में झलकता है।

Feminism In India में प्रकाशित एक लेख तथा ***Stanford Social Innovation Review*** में प्रकाशित लेख में Protsahan India Foundation के **H.E.A.R.T** मॉडल को भारत में बाल यौन हिंसा से निपटने के लिए एक प्रभावी मॉडल के रूप में मान्यता मिली है | जहाँ कहा गया: "थिएटर और आर्ट थैरेपी के ज़रिए बच्चें खुद को फिर से सुरक्षित महसूस करती हैं। यह केवल टूल नहीं, बल्कि पुनर्निर्माण की प्रक्रिया है।"

जहाँ डोनर अक्सर इनपुट-आउटपुट-आउटकम की भाषा में बदलाव को समझते हैं, वहीं ज़मीनीस्तर में बदलाव का चेहरा इन कहानियों में नज़र आता है। यह बात ***The Better India***: जैसे कई मीडिया प्लेटफॉर्म्स भी अपने रिपोर्ट में उजागर कर चुके हैं, जहाँ उन्होंने Protsahan की आर्ट-आधारित हीलिंग प्रक्रिया को देश के अन्य संस्थानों के लिए मॉडल बताया।

जब थिरकती कहानी महसूस की जाती है, तो कला भी डाटा का रूप ले लेती है | हमारी कहानियाँ आंकड़ों से नहीं, भावना और कला से गढ़ी जाती हैं। जब एक बच्ची मिट्टी से अपने सपनों को बनाती है, वह केवल कला नहीं है | वह उसका पुनर्निर्माण है। जब वह कठपुतली के ज़रिए अपने दर्द को बाहर लाती है, वह केवल प्रस्तुति नहीं है, वह डाटा पॉइंट है, जो बता रहा है कि **healing** हो रही है।

क्योंकि बदलाव तब ही टिकाऊ बनता है जब वह इंसान के भीतर उतरता है। जब एक बच्चा अपने डर को पार करता है | एक महिला अपने हक के लिए बोलना सीखती है, समुदाय अपने बच्चों के लिए सुरक्षा माँगता है | तब असल में सामाजिक परिवर्तन होता है।

India Development Review पर प्रकाशित एक लेख में इसे बखूबी समझाया गया है:

"हमें 'लॉजिक मॉडल' से आगे बढ़कर 'लिविंग मॉडल' की ओर बढ़ना होगा, जहाँ परिवर्तन सिर्फ योजना के बॉक्स में नहीं बल्कि ज़मीन पर होता दिखे।"

कहानियाँ ही हैं असली प्रमाण| Protsahan India Foundation की यात्रा के हर पड़ाव पर हमने यह सीखा है कि कहानियाँ भी प्रमाण होती हैं। वे हमें यह बताती हैं कि किसी कार्यक्रम(Program) ने लोगों के जीवन में क्या बदला, कैसा असर डाला। वे आपको उस क्षण में ले जाती हैं जहाँ परिवर्तन ने जन्म लिया।

“हमारी कहानियाँ आँकड़ों की चुप्पी को तोड़ती हैं।”

चाहे वह किसी गर्ल चैंपियन की भावनाओं से भरी पहली पेंटिंग हो, या किसी गर्ल चैंपियन का थिएटर के मंच पर पहला कदम, या किसी महिला का स्लम पंचायत में सामने आकर बोलना | ये सभी संकेत हैं कि हीलिंग हो रही है, बदलाव हो रहा है। और ये बदलाव किसी चार्ट में नहीं, बल्कि जीवंत दिलों में दर्ज हो रहा है।

अब समय आ गया है कि हम विकास और सामाजिक कार्य के क्षेत्र में कहानियों को भी उतना ही महत्व दें जितना कि आँकड़ों को। दोनों का संतुलन ज़रूरी है। एक संस्था के रूप में हमने यह सीखा है कि जब आप केवल आँकड़ों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो अक्सर बदलाव का सबसे संवेदनशील पहलू और उसकी कहानी आपकी नज़र से छूट जाता है।

हाल ही में एक प्रमुख अख़बार ने एक गांव की लड़की की कहानी प्रकाशित की, जिसने लॉकडाउन के दौरान खुद के बनाए सोलर लैंप से पढ़ाई जारी रखी और बोर्ड परीक्षा में टॉप किया। यह खबर केवल एक 'स्टूडेंट पास हुई' की संख्या नहीं थी, बल्कि उस कहानी ने हमें बताया कि संसाधनों की कमी में भी उम्मीद और आत्मविश्वास कैसे रास्ता बनाते हैं।

इसी तरह जब किसी रिपोर्ट में बताया जाता है कि "500 महिलाओं को रोजगार मिला", तो वह संख्या तब ज़्यादा अर्थपूर्ण बनती है जब हम यह भी जानते हैं कि उनमें से कई महिलाएँ घरेलू हिंसा से बचकर कैसे आत्मनिर्भर बनी | यह कहानी आँकड़ों को मानवीय बनाती है।

कहानियों को सुनिए, समझिए, और उन्हें भी 'डेटा' के रूप में मान्यता दीजिए। रिपोर्ट में केवल संख्या ही नहीं, मानवता की झलक भी देखिए।'इम्पैक्ट' को केवल पर्सेंटेज से नहीं, परिवर्तन से मापिए। हम मानते हैं कि परिवर्तन की सबसे गहरी भाषा कहानी होती है।